हरियाणा के गांधी थे बाबू मूलचंद जैन

लाला जगतनारायण के सहयोगी रहे स्वतंत्रता आंदोलन में

करनाल, 20 अगस्त (का.प्र.): हरियाणा के गांधी नाम से विख्यात बाबू मूलचन्द जैन का जन्म सोनीपत जिले के गांव सिकंदरपुर माजरा तहसील गोहाना, में 20-8-1915 हुआ और 12-9-1997 को अन्तिम पल तक पूरी तरह कार्यरत रहते हुए उनका निधन हुआ। अपने शैक्षणिक जीवन में वह सदा हीं प्रथम रहे और लाहौर से लॉ की प्रथम परीक्षा में जयश्रीराम, स्वर्ण पदक से सम्मानित हुए। उन्होंने सन 1941 गांधी के आह्वान पर सविनय अवज्ञा आन्दोलन और सन 1942 भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया था जिस कारण अंग्रेज सरकार ने उन्हें दोनों बार जेल में डाल दिया था। इस दौरान वे गुजरात व मुलतान जेलों में रहे। इससे पहले 1937 में रोहतक के असौधा गांव में सत्याग्रह के दौरान उन्हें जमीदारा लीग पार्टी के कार्यकर्त्ताओं ने बेरहमी से पीटा था। आजादी के बाद भी 1975 में एमरजैंसी का विरोध करने पर उन्हें 19 माह जेल में बिताने पड़े।

आजादी के बाद बाबू जी ने जिला कांग्रेस कमेटी, करनाल के सचिव के रूप में काम करते हुए गांधी नैशनल मैमोरियल फंड के लिए 6 लाख रुपए की राशि एकत्रित की। उन्होंने बलिदान नामक पत्रिका निकाली। 1952 में वह पंजाब विधानसभा के सदस्य निर्वाचित हुए और 1954 तक अपनी आय का 6वां भाग आचार्य विनोबा भावे के सम्पत्ति दान आन्दोलन में देते रहे। 1956 तक वह जिला भू-दान समिति, करनाल के संयोजक रहे। इसी साल वे पंजाब के लोक निर्माण, आबकारी व कराधान मंत्री बने। 1957 के लोकसभा चुनाव में बाबू मूलचन्द जैन कैथल लोकसभा क्षेत्र से सांसद निर्वाचित हुए। सन् 1985-87 में बाबू जी ने राजीव लोगोंवाल समझौता की धारा 7 व 9 विरोध किया तथा चौधरी देवीलाल द्वारा चलाए गए न्याय युद्ध आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया व इस दौरान जेल भी गए। सन् 1987 में चौधरी देवीलाल की सरकार बनने के बाद बाबू जी योजना बोर्ड के उपाध्यक्ष बने तथा इस दौरान उन्होंने राज्य में शिक्षा के प्रसार के लिए पुस्तकालय आंदोलन व नैतिक शिक्षा पर विशेष बल दिया। उन्होंने जुलाई 1989 मे तत्कालीन मुख्यमंत्री से मतभेदों के कारण योजना बोर्ड के उपाध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया। उन्होंने हरियाणा में लाइब्रेरी एक्ट लागू करवाया व अपने गांव में लाइब्रेरी खुलवाई। इस कर्मयोगी ने 12 सितम्बर, 1997 को पार्थिव शरीर का त्याग किया और उनका अन्तिम संस्कार राजकीय सम्मान के साथ किया गया। उनकी महानता, गरीबों, समाज एवं राजनीति की सेवा को ध्यान में रखते हुए उन्हें हरियाणा के गांधी की संज्ञा दी जाती है। एक विचारक, राजनीतिज्ञ, समाज सुधारक और निर्धन हितैषी के रूप में उन्हें सदा जाना जाएगा।

गांधीवादी मूलचंद जैन की जन्म शताब्दी मनेगी 23 को

करनाल, 20 अगस्त (का.प्र.): महान स्वतंत्रता सेनानी, पुस्तकालय आन्दोलन के प्रणेता व प्रसिद्ध गांधीवादी नेता बाबू मूलचन्द जैन की जन्म शताब्दी करनाल में मनाई जाएगी। इस अवसर पर मुख्य कार्यक्रम, 23 अगस्त को सुबह 10.30 बजे, राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान के मुख्य सभागार में होगा। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रदेश के राज्यपाल प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी होंगे। गांधीवादी विचारक व पूर्व सांसद, डा. रामजी सिंह समारोह की अध्यक्षता करेंगे। इस अवसर पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए बाबू मूलचन्द जैन जन्म शताब्दी समारोह समिति के सचिव अशोक कुमार जैन, सदस्य प्रो. बाल किशन कौशिक ने बताया कि बाबू जी के जीवन और सिद्धांतों से नई पीढ़ी को प्रेरित करने के लिए एक ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि का आयोजन किया जाएगा। इसके अलावा देश के ज्वलंत मुद्दों पर एक गोष्ठी का आयोजन भी किया जाएगा। प्रतियोगिताओं के विजेताओं को 23 अगस्त को मुख्य समारोह में सम्मानित किया जाएगा।